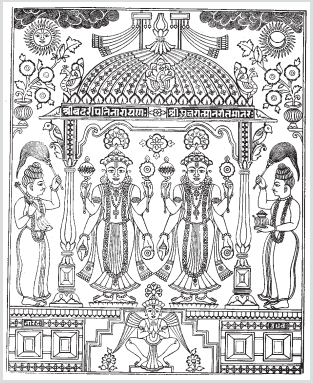


श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ ● फेक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( महंत स्वामी )

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in



मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००


# श्री स्वामिनारायण

## श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र


वर्ष - ५ अंक : ५५ नवम्बर-२०११


## अ नु क्र म णि का


०१. अस्मदीयम् ०२

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३

०३. प्राणायाम ०४

०४. सुवासिनी भाभी के कंकड (कंगन) का दर्शन ०६

०५. नूतन वर्षाभिनन्दन ०७

०६. मूली धाम में प.पू. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३९ वाँ प्रागट्योत्सव सम्पन्न ०८

०७. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से ०९

०८. काली चौदश-हनुमानजी महाराज के पूजन का पर्व १५

०९. सत्संग बालवाटिका १६

१०. भक्ति सुधा १८

११. सत्संग समाचार २१

# अस्मदीयम्

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी वाचकों को नूतन वर्ष का प्रेम पूर्वक जयश्री स्वामिनारायण।

अपने जीवन में प्रत्येक वर्ष दीपावली तथा नूतन वर्ष आता है और चला भी जाता है। जिससे उत्साह, उमंग, श्रद्धा, प्रेम तथा आत्मीयता से लोग आपस में मिलते हैं। पुराना जो भी खराब सम्बन्धहै उसे भूलकर एक दूसरे को आत्मीय भाव से गले से लगे मिलते हैं। यह अपने पारिवारिक व्यवहारिक तथा सांसारिक जीवन के लिये आवश्यक भी हैं।

आध्यात्मिक जीवन में भी इसी तरह का विचार करना चाहिये। विगत वर्ष हम अपना जीवन किस प्रकार जीये, भगवान की कितनी भजन किये, शिक्षापत्री में महाराज ने जो आज्ञा की है उसका कितना पालन किये, देव, आचार्य में कितनी निष्ठा की वृद्धि हुई इन सभी का चिन्तन करना चाहिये। देव के लिये अपनी शुद्ध इनकम में से दशांश विशांश का दान करके हम कितना शुद्ध हुये इसका मूल्यांकन करना चाहिये। अपनी बाल्यावस्था तथा युवावस्था तो पानी की तरंग की तरह मौज मस्ती में बीत जाती है – इसका ध्यान जब वन में चले जाते हैं तब आता है। तब तक तो बहुत विलम्ब हो जाता है। इसलिये युवान सुषुप्ति को हटाकर जागृत होकर ध्येय की प्राप्ति के लिये तैयार हो जांय। अपना जीवन इतना सुन्दर बनाये कि जिससे अन्य को प्रेरणा मिले। नूतन वर्ष के इस मगंल अवसर पर इष्टदेव श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना है कि अपना श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आगामी वर्ष २०१३ में २५ वर्ष पूर्ण कर रहा है इसलिये श्री नरनारायणदेव युवक मंडल रजत जयंती महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में सम्पन्न करने के लिये कटिबद्ध बनें ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०११)

३. श्री रसिकभाई भीखाभाई सरधारा के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, बापुनगर।
श्री विनोदभाई विष्णुभाई पटेल के यहाँ दूग्धालय के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, माणसा।

४. श्री सुरेशभाई विठ्ठलभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सेक्टर-१२ गांधीनगर
श्री कांतिभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, गांधीनगर।

५. श्री कांतिभाई दयालभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, कांकरिया, रातमें मूली पधारे।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महारजश्री की उपस्थिति में हजारो संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में ३९ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया।

६ से २४ ता. तक आस्ट्रेलिया तथा न्युजीलेन्ड के धर्मप्रवास में पदार्पण।

२५. जीरागढ ( हालार-मूली देश ) रोकडिया हनुमानजी महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, रात्रि में अहमदाबाद मंदिर में श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-आरती अपने वरद् हाथों से किया।

२६. श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में समूह शारदापूजन अपने वरद् हाथों से वेदविधिसे संपन्न किये।

२७. नूतनवर्षारम्भ के अवसर पर श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती, श्रृंगार आरती उतारकर अपने बैठक कक्ष में बैठकर सभी को दर्शन एवं आशीर्वाद का सुख प्रदान किये।
श्री वसंतभाई त्रिभोवनदास टांक परिवार के यहाँ पदार्पण, पालडी।

२८. श्री कृष्णकांत शामजीभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, थलतेज।

३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया बाल स्वरुप कष्टभंजन देव के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

**श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट**

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-१५ ● शयन आरती २०-३०

# प्राणायाम

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

श्रीमद् भागवत महापुराण के एकादश स्कन्धके १४ वें अध्याय में उद्धवजी ने भगवान से प्राणायाम के विषय में प्रश्न किया है, जिसके उतर में भगवान श्री कृष्णने ३२ वें श्लोक में कहा है कि हे प्रिय उद्धव ? जो अधिक ऊँचा तथा नीचा न हो ऐसे आसन पर उत्तराभिमुख दृढता के साथ दोनो हाथ को गोंद में रखर दृष्टि को नासिका के अग्रभाग में रखकर पूरक कुम्भक-रेचक प्राणायाम द्वारा नाडियों की शुद्धि करनी चाहिये । शरीर में मुख्य दस नाडियां है तथा शाखाये ७२ हजार हैं । नाडियों के अशुद्ध होने से आचार-विचार, वाणी, व्यवहार, स्वभाव, प्रकृति तथा स्वास्थ्य पर असर पड़ता है । प्राणायाम का अभ्यास धीरे-धीरे बढाते रहने से अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त वश में होता है।

प्राणायाम दो प्रकार का होता है - सगर्भ तथा अगर्भ । सगर्भ ऊँकार के नाद के साथ जपते हुये प्रणायाम में पूरक-कुम्भक रेचक करना चाहिये । ऊँकार के विना प्राणायाम करना अगर्भ कहा जाता है । सगर्भ उत्तम है । श्वांस लेते-छोड़ते समय मन में ऊँकार का जप करते रहना चाहिये । दिन में तीन बार ऊँकार युक्त प्राणायाम दश-दशवार करने से एक महीने में प्राणवायु वश में होते ही नाडियां शुद्ध हो जायेगी और शरीर निरोगी हो जायेगी ।

एक महीने के अभ्यास के बाद चिन्तन करना चाहिये कि हृदय रुपी एक कलम है उसमें आठदल खिले हैं । ऐसी कल्पना करनी चाहिये । हृदयाकाश में यह कल्पना करनी है। ( जिस तरह आप अपने रुम में आंख बंद करके भी अमुक वस्तु को देख सकते हैं । वह इसलिये कि उस रुम में नित्य का अभ्यास हो गया है ) उसी तरह हृदयाकाश में कलम की कली के ऊपर क्रमशः सूर्य, चन्द्र, अग्नि का न्यास करना चाहिये । बाद में कल्पना द्वारा उसी कली में अग्नि के अंदर मेरे स्वरुप ( श्रीकृष्ण ) को देखना चाहिये । मेरा स्वरुप ध्यान के लिये अति मंगलमय है ।( अपने इष्टदेव अक्षरधाम के अधिपति भगवान स्वामिनारायण रंग महोल के घनश्याम महाराज को हृदयाकाश में देखना चाहिये )

हे उद्धव ! मेरा स्वरुप बहुत कोमल है, शान्त है, सुन्दर मुखारविन्द, आजानबाहुः, सुन्दर कपोल, मंदहास, कानो में कुंडल, मेघ के समान श्याम, शरीर के ऊपरपीताम्बर, चार भुजा, कौस्तुभमणी, मुकुट, कंकण, बाजुबंद से युक्त भगवान के स्वरुप मे से प्रेम भरी दृष्टि की वृष्टि हो रही है। ऐसे स्वरुप का ध्यान करना चाहिये ।

हे उद्धव ! इस स्वरुप में अपने को स्थिर करना चाहिये । मेरे पूर्ण स्वरुप का ध्यान हो जाय तो किसी एक अंग में मन को स्थिर करना चाहिये । मंद-मंद हासवाले मुखारविन्द पर चित्तको स्थिर करना चाहिये । तीव्र ध्यान द्वारा मेरे इस स्वरुप में जो अपना मन पिरो देता है उसके बुद्धि का भ्रम मिटजाता है । उसे सर्वत्र परमात्मा का स्वरुप दिखाई देने लगता है । ऐसा करने वाले की अष्टसिद्धियां वश में हो जाती हैं । लेकिन योगी पुरुष सिद्धियों में नही मेरे स्वरुप में आशक्त होते हैं ।

श्रीजी महाराज ने गढडा मध्य के १३ वें वचनामृत में अपना उद्देश्य करके ध्यान करने की बात की है । ''मारी इन्द्रियों नी वृत्ति छे ते पाछी वाडीने सदा हृदय ने विषे आकाश छे तेने विषे वर्ते छे । अने हृदयाकाश ने विषे अतिशे तेज देखाय छे । ते तेज ने विषे एक भगवान नी मूर्ति देखाय छे ते अतिशय प्रकाशमय छे । घनश्याम छे तो पण तेजे करी ने श्याम जणाती नथी । ते द्विभुज छे ते चरण छे अतिशय मनोहर छे । मनुष्य की तरह आकृति है, किशोर हैं । मूर्ति के चारो ओर मुक्तमंडल बैठे हुये हैं और प्रभु को एक टक देख रहे हैं । ऐसे भगवान के स्वरुप को दृढता के साथ जो समझता है उसे कोई विघ्न नहीं आयेगा । उसके कल्याण का मार्ग खुल जायेगा ।

गढड़ा प्रथम में २३ - त्रण देह थी पर चैतन्यरुप एवुं पोताना स्वरुप ने विषे भगवाननी मूर्ति धारीने भगवाननुं भजन करे । गढडा प्रथम मां २० - जे भगवानना प्रतापने

विचारीने अन्तर्दृष्टि करे छे ते तो पोताना स्वरुप ने अतिषे उज्ज्वल प्रकाशमान जुए छे अने ते प्रकाश ने मध्ये प्रत्यक्ष एवा पुरुषोत्तम भगवान तेनी मूर्तिने जुए छे।

गढडा प्रथममां ४९ - भगवाननी मूर्तिने अन्तरमां धारीने तेना सामे जोई रहे छे तेनुं नाम अन्तर्दृष्टि छे अने ते मूर्ति विना बीजे ज्यां ज्यां वृत्ति रहे ते सर्वे बाह्य दृष्टि छे। गढडा प्रथममां ७३ - आत्माना विषे परमेश्वरनी मूर्तिने धारीने तेनी भक्ति करतो होय अने पोते ब्रह्मपुर थई गयो होय तोय भगवाननी उपासनानो त्याग करे नहीं माटे आत्म निष्ठा अने भगवाननी मूर्तिनो महिमा समज्या थकी कोई पदार्थनी वासना रहेती नथी।

सा. १५ - मारा जीवात्मा ने विषेज आ भगवाननी मूर्ति अखंड बिराजमानछे एम जाणीने उपरथी दर्शन स्पर्शादिकनी विषे आतुरता जेवुं नथी तो पण ऐनी प्रीतिना मूल उंडा छे।

सां. १० - जे साधु एम समजतो होय जे मारा चैतन्यने विषे भगवान सदाय विराजमान छे। तो ते संत थकी भगवान अने धाम ते अणु मात्र छेटे नथी। अने गढडा प्रथम ३२, गढडा प्रथम २५/२४ में भी इसी तरह का श्रीजी महाराज का वचन है।

वासुदेवानन्द वर्णीने सत्संगिभूषण अंश-२ के ३७ वें अध्याय में लिखा है कि - जेतलपुर ने विषे श्रीहरि विराजमान हता त्यारे भक्तों को भजन की रीति बताते हुये कहते हैं कि "हे भक्तों ! तमे मारु भजन करवा बेसो त्यारे सिंहासन वाडीने बेसवुं। अने पछी नासिकाग्र भाग सामी दृष्टि राखवी। पोताना देहमां प्राण-अपान ( श्वाछोच्वास ) श्वासजोवो। नासिका के अग्रभाग के देखते रहने से मन की स्थूलता खत्म होती है और मन शुद्ध होता है।

इस तरह करने से हृदय में मेरी मूर्ति का दर्शन होता हैं। मूर्ति के ध्यान के समय मेरे स्वरुप का ध्यान - श्वेत वस्त्र पुष्पहार से अलंकृत, प्रसन्नमुख, प्रत्येक अंगो का ध्यान करना। इस तरह करने से आपकी सभी क्रियाओं में मेरा ही दर्शन होगा।

प्राणायाम अनंत है परंतु भगवान श्रीकृष्ण के मुख से कहा गया तथा श्रीहरि के मुख से कहा गया ध्यान सरल है तथा सिद्ध है। दिन में तीन बार दश-दश मिनिट ऊँकार युक्त पूरक-कुम्भक-रेचक धीरे-धीरे करना चाहिये। दश सेकेन्ड से प्रारम्भ करे। प्रतिदिन दो सेकेन्ड बढाना चाहिये। एक महीन में ३० सेकन्ड तक पहुँचे। जितनी बार श्वास लें उतनी बार श्वांस रोकना ( कुम्भक ) उतनी बार बाहर निकलना ( रेचक ) चाहिये।

समय की मर्यादा आवश्यक है। जल्दी करने से हानिकी संभावना होती है। अधिक से अधिक ३० सेकन्ड का तीनों के लिये नियम रखना चाहिये । इस तरह करने से अन्तःकरण शुद्ध होगा तथा इन्द्रियां वश में होगी। बाद में ध्यान की मुद्रा दृढ होगी। प्राणायाम करने का स्थल खुला होना चाहिये - जहा पर सूर्य प्रकाश मिलता हो, शुद्ध हवा मिलती हो। नीचे बैठने की तकलीफ हो तो कुरशी, सोफा, पलंग के ऊपर भी बैठा जा सकता है। पूर्व या उत्तर मुख करके बैठना चाहिये। दाहिने हाथ के अंगुठे से दाहिने नाक के छिद्र को बन्द करना चाहिये तथा अनामिका से बांये नासिका के छिद्र को बन्द करना चाहिये । सोते हुये प्राणायाम नहीं करना चाहिये। अभ्यास प्रारम्भ करने के बाद एक-दो दिन अवकाश हो जाय तो उसकी गिन्ती नहीं होगी। आसन के बिना बैठना नहीं चाहिये। गरम या सूत का आसन होना चाहिये । प्लास्टिक आसन वर्ज्य हैं। प्रथम प्राणायाम के बाद भगवान की मूर्ति का हृदयाकाश में ध्यान करना चाहिये।

**प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संतो के लिये इस वर्ष का ओस्ट्रेलिया-न्युझीलेन्ड के धर्मप्रवास की डोमेस्ट्रीक तथा न्युझीलेन्ड के टिकट की सेवा का लाभ**

- **श्री प्रीतेश मनजी हीराणी**
- **श्रीमती कल्पा प्रीतेश हीराणी**
- **कु. विरल प्रीतेश हीराणी**
- **कु. विकुश प्रीतेश हीराणी**

**उपरोक्त परिवार के सदस्य धर्मकुल तथा संतो की सेवा का लाभ लिये थे। प्रभु इनके ऊपर खूब कृपा की बरसात करें तथा इसी तरह की सेवा करने की विशेष शक्ति प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव महाप्रभु के चरणों में प्रार्थना।**

श्री स्वामिनारायण

# सुवासिनी भाभी के कंकड (कंगन) का दर्शन

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण ने अपनी उपस्थिति में अहमदाबाद भुज, मूली, जेतलपुर, वडताल, धोलका, धोलेरा, जूनागढ, गढडा में मंदिर बनवाकर अपने हाथों से श्री नरनारायणदेव इत्यादि स्वरुपों को प्रतिष्ठित किये थे । उसमें भी श्रीहरि के परम सखा ब्रह्मानंद स्वामी से वडताल, जूनागढ तथा मूली में मंदिर का कार्य करवाया था।

श्रीजी महाराज के स्वधाम गमन के बाद मूली मंदिर के शिखर का काम बाकी था इसलिये ब्रह्मानंद स्वामी अपने अवशिष्ट जीवन के समय को मूली में रहकर बिताये और काम पूरा करवाये।

मूलीधाम के प्रति सुवासिनी भाभी की खूब श्रद्धा थी। जीवन का अधिक समय तथा अन्तिम समय मूली में बिताये । एक समय भाभी पुत्र आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज के साथ वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर मूली पधारी । मंदिर के शिखर का काम अवशिष्ट देखकर अयोध्याप्रसादजी महाराज से स्वामी के लिये संदेश भेंजी कि कार्य जल्दी पूर्ण करवाइये । ब्रह्मानंद स्वामी ने भी संदेश भेंजा कि ''मिस्त्री का पेमेन्ट बाकी होने से काम छोड़कर चले गये है । यहाँ की आफीस में उन सभी को पेमेन्ट देने के लिये पैसे नहीं है।

यह वात सुनकर श्रीहरि की भाभी सुवासिनी भाभी अपने सुवर्ण के गहने, चांदी के सिक्के, कंदोरा, कंगन इत्यादि भेंजवाकर कही कि इसमें से कारीगरों का पेमेन्ट देदीजिये।

ब्रह्मानंद स्वामीने कहा, अब लक्ष्मीजी प्रसन्न हो गयी है। अब मूली के आफिस में धन की कमी नहीं होगी । चांदी के सिक्कों से कारीगरों का पेमेन्ट पूरा हो गया । प्रसादी के पग नूपर तथा कंगन को राधाकृष्णदेव के आफीस में सुरक्षित रखदिये । बाद में सुवासिनी भाभी की प्रसन्नता से संप्रदाय में मूली की राधाकृष्णदेव की सर्वश्रेष्ठ आफिस मानी जाती थी। अन्य मंदिरों के कर्ज भी यहीं से पूर्ण किये जाते।

सुवासिनी भाभी तो आकाश में बादल देखकर कहा करतीं कि -

''जा रे बादली मूली मां जईने वरसजे''

सुवासिनी भाभी घनश्याम महाराज से भक्तिमाता से भी अधिक प्रेम करती थी यदि सुवासिनी भाभी को मूलीधाम के प्रति इतनी श्रद्धा हो सकती है तो घनश्याम महाराज को कितनी होगी ? मंदिर बनाने में धर्मकुल का कितना योगदान - समर्पण है यह प्रत्यक्ष देखने में मिलता है।

इस प्रसादी के कंगन को १८० वर्ष हो गये जो मूली मंदिर के खजाने में जैसे का तैसा सुरक्षित है । उसमें भाभी की भावना छिपी हुई है जिसका दर्शन ६-१०-११ को विजया दशमी के दिन सभी संत हरिभक्तों को हुआ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने ३९ वें प्रागट्योत्सव को मूली में मनाने के लिये मूली के महंत से एक शर्त रखे कि हम सभी संत-हरिभक्तों को भाभी के कंगन का दर्शन करावें तो जन्मदिन पर हम मूली आयेंगे।

ता. ६-१०-११ विजया दशमी के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। बाद में सुवासिनी भाभी के प्रेम-समर्पण का प्रतीक सुवर्ण कंकण जब सभा मंडप के मंच पर लाया गया तब प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री ने उसे मस्तक-हृदय से लगाकर प्रणाम करके पूजन-आरती किया था। संत-हरिभक्तों ने दर्शन करके जीवन को धन्य माना।

जन्मोत्सव में जो आये वे भाग्यशाली जो नहीं आये वे पछताये। इस संप्रदाय के मंदिरों में महत्व का हिस्सा धर्मकुल का है। जिनके त्याग वैराग्य में से सत्संग का विस्तार हुआ है । व्यक्ति को सदा अपने भूतकाल को देखना चाहिये, जो इतिहास को साथ रखकर चलता है वही सच्चा मानव है।

# नूतन वर्षाभिनन्दन

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी,
जमीयतपुरा ( महंत स्वामी माणसा )

वृक्ष गिरता है तो वहाँ दूसरा वृक्ष खड़ा हो जाता है। जमीन कोई खाली नही रहती। जहाँ कुछ अन्न डालते है वहाँ उग निकलता है।पीले पत्ते गिरकर फिर नये पत्ते आ जाते हैं। वसंत की बहार में गिरे पत्ते पुनः नये पत्तो के रुप में वृक्ष हरे भरे दिखाई देने लगते हैं। मनुष्य भी वृद्धावस्था आते ही शिथिल होने लगता है। अंत में मृत्यु को प्राप्त करता है। बालक के पैदाइस पर कितना आनंद होता है। चारो तरफ खुशियों की बरसात होने लगती है। खेतों में अनाज बोने के बाद खेत हरालियों से भरजाता है। अपने जीवन में ऐसा ही है। काल का चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक निरन्तर समय अपनी गति से चलता रहता है। दिन तथा महीना को क्रमशः बिताकर वर्ष के उत्तरार्ध में पहुंच जाते हैं। कौन जाने कितने पंचक - ग्रहण, पुष्य नक्षत्र जैसे पवित्र पलों से गुजरकर होली, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी जैसे त्यौहारों को श्रद्धापूर्वक मनाकर श्राद्धपक्ष में श्रद्धापूर्वक पितरों का तर्पण करके नवरात्री में मातृशक्ति की आराधना करके, दशहरा में दस मस्तक वाले रावण ( दशानन ) वधरुपी स्मृति पर्ब को मनाकर पुतला दहन करके विदा होतेहुये वर्ष के अन्त में वर्ष का हिसाब-किताब करने में सभी मशगुल हो जाते हैं। दीपावली के अवसर पर नूतन बही-खाता बनाकर उसका पूजन करते हैं। यही व्यावहारिकता है इसी को आध्यात्मिक रुप देने के लिये भगवान स्वामिनारायण ने ग.प्र. ३८ में जीवन का तथा जीवन में सत्संग का तथा सत्संग में आध्यात्मिकता का लेखा-जोखा करने के लिये सतत प्रयत्नशील रहने की वात की है। जगत सम्बन्धी वासना कितनी थी तथा भगवत सम्बन्धी वासना कितनी बढी। दोनो बराबर है या नहीं ?

इस हिसाब का रजिस्टर प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन-बुद्धि में तैयार करना चाहिये। किसी को धोखा देने की अपेक्षा अपने क्रिया कलाप से प्रामाणिक रहना चाहिये। संकल्प - विकल्प में से बाहर निकल कर जगत के व्यवहार से हटना ही आध्यात्मिकता है। इस आध्यात्म में त्यागी-गृही में कोई भेद नहीं रहता। सभी को यथार्थरुप से भगवदीय होना है। यही आन्तरिक साधना है यही कठोर तप है। इसमें सच्चे गुरु का समागम तथा अन्तर का आशीर्वाद अत्यंत आवश्यक है। जगत की तरफ से सम्पूर्ण निर्वासनिक होकर अन्तःकरण में भगवान का सातत्य रखकर उन्हीं में लीन होने के लिये जन्म जन्मान्तर का हिसाब रखने के लिये रजिस्टर बनाया गया है। श्रीहरिने इसी हेतु से अपने आध्यात्मिकता का लेखाजोखा करने के लिये ही यह रजिस्टर की बात कही है। जिंदगी का इतना वर्ष व्यर्थ में चला गया या यथार्थ में गया इसे आध्यात्मिकता के मार्ग में समझा जा सकता है। सगु. गुणातीतानंद स्वामी की बातों में बताया गया है कि निरन्तर पीछे के क्रिया कलाप को देखना चाहिये, हम क्या किये और क्या कर रहे हैं।

आइये इस दीपावली के अवसर पर जागरुक होकर अध्यात्म का दीपक जलाते हैं। जब से जागे तब से मंगल प्रभात। श्रीहरि की प्राप्ति के आनंद में ऐसा डूब जांय कि उनकी दृष्टि में अनमोल रतन बनकर निकलें।

प्रभु की इतनी कृपा हमे प्राप्त हो कि आषाढी मेघ के सम्पूर्ण हकदार हम ही हों। कवि कलापी ने लिखा है कि -

"मण्यु छे तो माणो,
जीवन कचवारे शीद वहो ॥"

स्वामी ब्रह्मानंद ने लिखा है कि -

"आज नी घडी रे धन्य आजनी घडी
में नीरख्या सहजानंद धन्य आजनी घडी।"

नूतन वर्ष में भगवान स्वामिनारायण तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संत ऐसा आशीर्वाद दें कि अपने अन्तःकरण में श्रीहरि को देखते रहें। जहाँ प्रभु है वहीं लक्ष्मी हैं वहीं यश है। उसी की विजय है उसी की जयजयकार होती है। अमृतलाभ का शुभ पल आ गया है। जागो ध्येय की प्राप्ति की तरफ आगे बढो। नूतन वर्ष के स्वागत में आगे बढो।

नूतन वर्षाभिनन्दन।

# मूली धाम में प.पू. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३९ वाँ प्रागट्योत्सव सम्पन्न

– साधु आत्मप्रकाशदास ( कोठारी मूलीधाम )

श्री नरनारायणदेव की गादी के आचार्यश्री का ३९ वाँ प्रागट्योत्सव मूलीधाम में बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया।

श्रीहरि के परम सखा स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी तथा देवानंद स्वामी की कर्मभूमि मूलीधाम में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में ता. ६-१०-११ विजया जशमी को पांचसो जितने संत एवं पचीस हजार हरिभक्तों की उपस्थिति में मूली मंदिर के विशाल प्रांगण में मंहत शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी की देखरेख में प.पू.ध.धु. वर्तमान पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री का प्रागट्योत्सव मनाया गया। जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में ३९ धन्टे तक स्वामिनरायण महामंत्र की अखंड धुन रखी गयी थी। तीन दिन का हरियाग तथा समूह महापूजा एवं हनुमानजी – गणपतिजी की पुनः प्रतिष्ठा की गयी थी।

मूली देश के उत्साही हरिभक्त यद्यपि खेती की सीजन थी फिर भी उत्सव के एकदिन पूर्व आगये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री भी एकदिन पूर्व सायंकाल पदार्पण किये थे।

विजया दशमी के शुभ अवसर पर प्रातः काल श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक रखा गया था। बाद में अखंड धुन की पूर्णाहुति की गयी थी। विष्णुयाग के समापन के बाद मंदिर के चौक में दांडिया रास किया गया था। जिस में राजकोट के लक्ष्मीनारायण युवक मंडल तथा सुरत ( पालनपुर पाटिया ) के हालार देशवाले हरिभक्त जिस तरह अयोध्याप्रसादजी महाराज के मन को रास करके जीत लिये थे ठीक उसी तरह हालारी हरिभक्तों ने प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के मन को दशहरा के शुभ अवसर पर रास खेल करके जीत लिया था।

मूली, कालुपुर तथा जेतलपुर के महंत स्वामी तथा अन्य अग्रणी संतो ने षोडशोपचार से जन्म दिन की पूजा विधिकी। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सुवासिनी भाभी के कंगन का पूजन अर्चन किया।

जन्मोत्सव के मुख्य यजमान श्रीजी सिरामिक मोरबी परिवार के हरिभाई, तुलसीभाई, जीवराजभाई इत्यादि हरिभक्तोंने प्रथम पूजन किया।

जेतलपुर संस्कृत पाठशाला के ब्राह्मण विद्यार्थियों ने स्वस्ति वाचन चार वेंदो के गान से किया। सभा संचालन प्रफुलभाई गडवीने बड़ी सुन्दरता के साथ किया। संतो की शुभेच्छा, भक्तो का सन्मान इत्यादि व्यावहारिक कार्य किया गया। ब्रह्मानंद स्वामी धर्मकुल के प्रति खूब प्रेम करते थे। श्रीजी महाराजने हम सभी के लिये प्रसादी की एक विशाल परंपरा दी है। इसका जितना गुणगान किया जाय कम है।

सर्वोपरि भगवान का कार्य सर्वोपरि है। धर्मवंश आचार्य पद सर्वोपरि है। सर्वोपरि वंश को न मानने वाला विमुख है। ऐसी सुंदर भाव के साथ संत हरिभक्त जन्मोत्सव को संपन्न किये। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर तथा देव के प्रति जो समर्पित है वही सच्चा संत है वही वैराग्यवान है ऐसी सिद्धान्त की वात किये।

# श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आनेवाले प्रत्येक हरिभक्त या मुमुक्षु अपने मन में शान्ति का अनुभव करते हैं। यह बात अब नहीं है सभी के अनुभव का विषय बन गया है। बारम्बार आते रहने से प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक प्रकाश सा भासित होने लगा है। एक चमत्कार जैसे प्रतीत होता है, म्युजियम दर्शन के लिये कितने लोग चलके आते हैं ऐसे लोगों के मन में अपार शांति का अनुभव होता है। जैसे नरनारायणदेव के दर्शन में शान्ति मिलती है ठीक वहीं शान्ति यहाँ म्युजियम के दर्शन में शान्ति मिलती है। सभी प्रकार से दिव्य सन्तोष मिलने लगा है। कितने हरिभक्त म्युजियम के रजकण को मस्तक पर ही नहीं चढाते बल्कि उस रजकण को अपने घर लेजाते हैं - कोई रोगी है तो उसके मस्तक पर लगाते हैं और वह रोग मुक्त हो जाता है। अभिषेक कराने से कितने हरिभक्तों के मनोरथ पूर्ण हुये हैं। यह कोई म्युजियम का प्रचार नहीं है परंतु बाहर रखे हुये बीजीटर्स बुक में आने वालों का लिखा अभिप्राय है। इस दिव्य अनुभूति का एहसास जब कोई वहाँ आयेगा तभी ज्ञान होगा। इसीलिये प.पू. बड़े महाराजश्री की आने वाले लोग प्रशंसा किये बिना रहते नहीं। उनके चरणों में कोटि-कोटि प्रार्थना वन्दना करते जाते हैं। इतना ही नहीं पू. महाराजश्री के आचार-विचार को जीवन में उतारे जाते हैं। पू. बड़े महाराजश्री नित्य म्युजियम में पधारकर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने जाते हैं। वहाँ पर २०/- रुपये की भेंट भी रखते हैं। ( म्युजियम की प्रवेश शुक्ल )

## श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली

- रु। ५१,०००/- सां.यो. शांताबा सोनी ( हवेली-कालुपुर ) प्रति सोनलबहन एम. परमार
- रु। १९,०००/-एक सत्संगी हरिभक्त कलोल।
- रु। १०,०००/-पंचरत्न ज्वेलर्स, अहमदाबाद।
- रु। १०,०००/-पूनमभाई मगनभाई पटेल - कलोल।
- रु। १०,०००/-घनश्याम इन्जिनियरींग
- रु। ७,१००/- कोशल कोर्पोरेशन।
- रु। ५,००१/- लाभु बहन परषोत्तमदास पटेल ( दासभाई - हर्षदकोलोनी बापूनगर )
- रु। ५,०००/- जगदीशभाई के. दरजी - बोपल।
- रु। ५,०००/- नगीनदास दोशी - मणीनगर ( म्युजियम की मन्नत से गला का केन्सर ठीक हो गया )
- रु। ५,०००/- रवीभाई नारणभाई पटेल - मोडासा
- रु। ५,०००/- यशवंतभाई पटेल।
- रु। ५,०००/- के. की. प्रजापती।
- रु। ५,०००/- अ.नि. दुष्यन्तभाई वाडीभाई ठक्कर अहमदाबाद वती चि. मानसी

श्री नरनारायणदेव के अभिषेक के लिये चांदी का बड़ा वर्तन अ.नि. नटवरलाल माणेकलाल भावसार, मृदुलाबहन नटवरलाल भावसार वती नरेशभाई भावसार, सावन नरेशभाई भावसार, रुपल सावन भावसारने भेंट में दिया।

## श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| ता. २-१०-११ | श्री स्वामिनारायण सत्संगी पुरुषवर्ग - लवारपुर वती पुरुषोतमदास के. पटेल पालडी तथा मिनेषभाई जे. पटेल। | ता. १२-१०-११ | महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद-बापुनगर वती पुजारी रडियातमा। |
| ता. ४-१०-११ | मनजीभाई शीवजीभाई हीराणी तथा वनिताबहन - नारणपुरा कच्छ | ता. १३-१०-११ | सत्संगी महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर - नारणपुरा। |
| ता. ११-१०-११ | लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की प्रेरणा से सां.यो. शान्ताबा सोनी ( हवेली कालुपुर ) वती सोनलबहन परमार। | ता. २८-१०-११ | रमेशभाई अंबालाल पटेल उनावा, हाल साबरमती। |

**नोट : श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन बुक विना मुल्य श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से मिलेगी।**

**संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।**

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई ( दासभाई ) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

**www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com**

# अभिप्राय

**अभिप्राय**

१५ अक्टूबर-२०११ को प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री के साथ श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रत्येक प्रसादी की वस्तु के दर्शन का लाभ मिला । प.पू. बड़े महाराजश्री ने बड़े प्रेम के साथ अगत्य की वस्तुओं का माहात्य समझाते हुये इतिहास बताया था । आज यह अनुभूति हुई कि अक्षरधाम में घूम रहा हूँ। श्रीजी के स्वरुप में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में नंद संतो के प्रतिनिधिस्वरुप प.पू. पी.पी. स्वामी जेतलपुर तथा स.गु. शा. निर्गुणदासजी तथा सेवको की उपस्थिति में दिव्य वातावरण का आनन्द हृदय में उमड़ रहा है। जीवन में इस तरह का आनंद कभी भी नहीं मिला था। अक्षरधाम का सुख क्या है आज वह समझ में आ गया। हरिभक्त इस म्युजियम का दर्शन अचूक करें इसी में जीवन की सार्थकता है।

- प्रो. हितेन्द्रभाई पटेल

जितना यह म्युजियम विशाल है इससे भी विशाल प.पू. बड़े महाराजश्री का तथा धर्मकुल का हृदय विशाल है। वह इसलिये कि अनंत जीवों के कल्याण के लिये अखिल ब्रह्मांड का खजाना जनता के सामने रख दिया है। इनकी कृपा की कोई सीमा ही नहीं है। महाराज अपने भक्तो के ऊपर इतनी अधिक प्रेम की वर्षा की हैं जिससे अक्षरधाम के समान म्युजियम को बनाकर मानवमात्र का कल्याण किया हैं । स्वप्न में भी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती ऐसी प्रसादी की वस्तुयें प्रत्यक्ष दर्शन दे रही है।

बड़े संत कहते और शास्त्र में भी यह आता है कि महाराज जब पृथ्वी पर पधारे तब उनकी सेवा करने के लिये मुक्त-वस्तु के रुप में आये थे जिन्हें म्युजियम में दर्शन के लिये रखा गया है।

परम पूज्य बड़े महाराजश्रीने इस विश्व में ऐसा अद्‌भुत अविस्मरणीय श्री स्वामिनारायण म्युजियम भगवान का धाम बनादिया है जिसका दर्शन करके न केवल संप्रदाय के भक्त बल्कि बाहर से आने वाले अन्य भी परम शांति का अनुभव कर रहे हैं । अद्‌भुत दुर्लभ ऐसी भगवान श्री स्वामिनारायण की प्रसादी की वस्तुओं का एक ही स्थल पर दर्शन होना कठिन था। फिर भी पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प की भावना ने अकल्पनीय कार्य कर दिया।

भगवान श्री स्वामिनारायण बड़े महाराजश्री द्वारा समस्त सत्संग को खूब सुखिया करें ऐसी प्रार्थना के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

- आसुतोष तथा माया बारोट, एटलान्टा, अमेरिका

**What a wonderful experience to take in a greet insight into our Sampraday. Thank you for displaying all of the different varieties of our Lords used Possessions. We would never would have experienced him if this museum was not here. Also thank you for making us feel welecome throughout our time at the museum. Cannot wait to come back again when the main hall is completed. Thank you once again for the wondeful experience. (S.B.)**

**Thank you so much for being with us for the visit of this wondeful musuem. It was realy so interesting and also moving to see and feel all these memorie of Lord Swaminaryana.**

**impressive collection, nice faculties very helpful guides.**

इस म्युजियम को साकार रुप देने वाले पू. बड़े महाराजश्री का जो अथक परिश्रम किया है इसके लिये किसी के साथ तुलना नहीं हो सकती - अतुलनीय यह कार्य है। स्तुत्य कार्य है, यह बहुत बड़ा उम्दा विचार कहा जायेगा । म्युजियम की साज सज्जा तथा उसकी उपयोगता, रखरखाब इत्यादि को मूर्त रुप देने वाले पू. महाराजश्री धन्यवाद के पात्र हैं।

- मूलजीभाई चौधरी ( बालवा-अमेरिका )

**As I dont reside in Ahmedabad, it was very difficult for me to visit this Museum, though I come to Ahmedabad very often, due to busy shecdule of tife, I could never visit this divine place. But this time due to my Mother's saying I made my mind to visit it.**

**Just stepping into the musuem I, could feel divine and eternal peace in my mind. Being into different halls (Dham) I could feel so blessed that I got a chance to visit this. I could feel peace in my mind, I was completely relieved from my stress and worries. I would like to say that all the Satsangi and swayam Sevak here are very co-operative.**

**It is my pleasure and the blesisngs of Lord Narnarayan Dev that I belong to very religious family & got a chance to visit this place which relieved one of all the stress & worries.**

**I step out of this Musume with eternal peace and new way to my life that just believe and fave faith, way to your worries will be shown by one and only Lord Swaminarayan.**

**(Krupa Prafulkuamr Chauhan - Dubai)**

## મૂળી શ્રી રાધાકૃષ્ણદેવ હરિકૃષ્ણ મહારાજના સાનિધ્યમાં ઉજવાયેલ
## પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના ૩૯મા જન્મોત્સવની તસવીરો

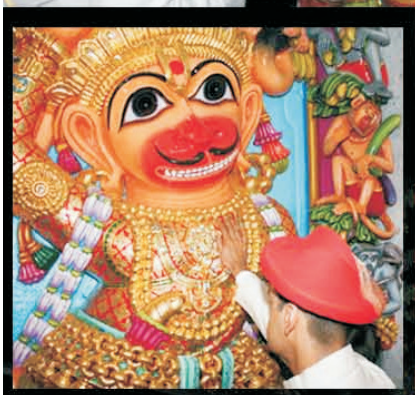

# काली चौदश-हनुमानजी महाराज के पूजन का पर्व

– गोरधनभाई वी. सीतापरा ( बापूनगर )

भगवान तथा भगवान के भक्त के रक्षण में जिन्हें प्रीति है तथा दुष्टों को दण्ड देने में जो सदा तत्पर रहते हैं, ऐसे हनुमानजी का एक प्रसंग श्रीहरि के चरित्र के साथ सम्बद्ध है।

वन विचरण के समय श्री कृष्ण जन्माष्टमी की घोर अन्धकार मयी रात्रि में श्रीहरि एक वट वृक्ष के नीचे विराजमान थे । श्रीहरि को किसी की डर नहीं थी । फिर भी मनुष्य चरित्र करते हुये नारायण कवच का पाठ करके समाधिकरने की इच्छा से स्वयं को हिंसक जन्तुं ओ से सुरक्षित रहने के लिये अपने कुल के प्रिय कुलदेव हनुमानजी का स्मरण करने लगे । उस समय पवन पुत्र हनुमानजी बड़े उत्साह के साथ श्रीहरिके पैर पर गिर पड़े और अति सूक्ष्मरुप धारण करके श्रीहरि के अगल बगल घूमने लगे । इस तरह करते हुये मध्यरात्रि के समय अपने टोला के साथ भयंकर, ताड़ की तरह ऊँचे, क्रोधसे भरे हुये ऐस भूत पिशाच, भैरवादिक उस वट वृक्ष के नीचे श्रीहरि के पास आये । काल भी देखकर डर जाय इस तरह भयंकर आकृति बनाकर श्रीहरि को भयभीत करने लगे । अपने निवास स्थान ऐसे वट के नीचे आकर भयंकर आवाज करने लगे । फिर भी श्रीहरि बड़ी शांति से बैठे रहे । उन्हें अविचलित देखकर भैरवने भूतों को आज्ञा की कि इस बटुक को खाजाओ । इस तरह कहकर श्रीहरि के पास उनका रुधिर पीने के लिये आये । वहाँ देखा तो हनुमानजी सुरक्षा में पहरा दे रहे हैं । इसके बाद तो उन्हें आया देखकर हनुमानजी पर्वताकार शरीर बनाया और अपनी पूंछ में लपेट कर सभी को जमीन पर पटकने लगे । पैरों के तले कुचलने लगे । बाद में भैरव को मुष्टिका प्रहार कर किल किलाहट की भयंकर आवाज करके बिकराल रुप दिखाया । वज्र के समान अपनी मुष्टिका के प्रहार से नीचे गिरा दिये । उसके मुख-नाक से रक्त की धारा बहने लगी । विशाल काय वह भैरव सभी अपने समुदाय के ऊपर ढह गया । बाद में होश आने पर धीरे से वहाँ से चल दिया । अब उसे यह भीति थी कि हनुमान पुनः मुष्टि प्रहार न कर दें । श्रीहरि प्रत्यक्ष यह घटना देखते रहे लेकिन न देखे जैसा व्यवहार कर रहे थे ।

सूर्योदय के समय श्रीहरि को चार दिन का उपवासी जानकर हनुमानजी स्वादिष्ट फल लाकर समर्पित किये । श्रीहरि बालरुप हनुमानजी को आलिंगन करके बोले कि हे हनुमान । आप धन्य हैं । हमारी बहुत सेवा किये । आज आप नहीं आतें तो हमारी मृत्यु निश्चित थी । तब मारुति ने कहा कि हे प्रभु ! आप काल के भी काल हैं । हम आपकी क्या रक्षा कर सकते हैं ? आपके सामर्थ्य से हम समार्थ्यवान है । फिर भी आप मनुष्य लीला करना चाहते हैं तो कीजिये । कुल देवता पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये पुनः बालरुप हनुमानजी को गले लगाते है और कहते है कि हे हनुमान । अब आप जाइये तथा इस चरित्र का स्मरण करते रहियेगा । काली चौदश के शुभ प्रसंग पर हम सभी हनुमानजी का दर्शन-पूजन करके यह प्रार्थना करें कि हे धर्मकुल के कुल देव श्री हनुमानजी ! हम भी धर्मकुल के आश्रित हैं इसलिये श्रीहरि के चरणों में तथा दिव्य सत्संग में हमारा उत्तरोत्तर प्रेम बढता रहे ऐसा आप आशीर्वाद दीजियेगा ।

# सत्संगबालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## सच्ची कमाई

– शा. हरिप्रियदासजी ( गांधीनगर )

''उत्सव प्रिया खलुमानवाः''

मनुष्य को उत्सव बहुत प्रिय लगता है । उत्सव-त्यौहार पर्व के आने पर सभी आनन्दित हो उठते हैं । उसमें भी जब दीपावली आती है तब तो मानों स्वर्ग आगया हो ऐसा लगता है । मंदिरों में भी उस उत्सव पर विविधकार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, इस उत्सव में श्रद्धालु बड़ी श्रद्धा के साथ भाग भी लेते हैं ।

जब उत्सव की बात आई तो योगी गोपालानन्द स्वामी से किसी ने पूछा कि स्वामी उत्सव में जाकर क्या करना है ? स्वामीने उत्तर दिया कि –

उत्सव में जाकर सन्त समागम करके सत्संग की कमाई करनी चाहिये ।

ऐसे सत्संग से कभी वृद्धि होती है तो कभी न्यूयन होता है। तो कभी समान रहता है ।

वह कमाई क्या है ?

तो श्रीहरिजीने विषे माहात्म्य युक्त ने धर्मादिक अंगे सहित जे भक्ति करवी, ते पण महत् पुरुषना संगे करीने शीखी ( प्र. खार्ता नं. २ ) अपने संप्रदाय में उत्सव के लिये एक शब्द विशेष रुप से उपयोग किया जाता है वह है ''समैया'' समैया शब्द अपने संप्रदाय में पारिभाषिक शब्द के रुप में लिया गया है । अन्यत्र कहीं भी समैया शब्द का उपयोग नहीं होता ।

इन उत्सवों से कमाई होती है ऐसा कहा जाता है । यद्यपि कमाई शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी, व्यापार, धंधा इत्यादि में होता है । अर्थात् कमाई शब्द का प्रयोग आर्थिक स्थिति के साथ जुड़ा हुआ है । लेकिन गोपालानंद स्वामीने इस कमाई को दूसरे अर्थ में लिया है – उत्सव में जाकर सन्त समागम द्वारा सत्संग की कमाई करनी चाहिये । इतना ही नहीं बल्कि इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि करनी चाहिये । स्वामी ने उत्सव में तीन प्रकार से कमाई की वात किया है – प्रथम यह कि उत्सव में जाकर सत्संग में वृद्धि करना द्वितीय यह कि उत्सव में जाकर अपने सत्संग को समान भाव रखना है, नहीं हानि नहीं लाभ । तीसरे वे होते हैं कि उत्सव में जाकर कमाई न करके हानि करके आते हैं । गोपालानंद स्वामीने कहा है कि उत्सव में जाने वाले तीन प्रकार के भक्त होते हैं । कितने तो कमाई करके आते हैं । कमाई क्या है ? यह श्रीहरिने बताया है कि धर्म के साथ भक्ति करना एवं महान् पुरुषों का सत्संग करना ही कमाई है ।

यह कमाई बढेगी कैसे ? इस पर स्वामीने लिखा है कि – सत्पुरुषों के साहचर्य से इसे बढाया जा सकता है । यह एक दिन में नहीं बढती । बालक इस तरह बोलता है कि हमें भी काका की तरह एम.बी.बी.एस. होना है । इसके लिये उसे वर्षो तक पुरुषार्थ करना पड़ता है । इसी तरह व्यक्ति जब सन्तों के साहचर्य में जाता है तो उसे भी धर्म के साथ भक्ति और सत्संग लम्बे समय तक करने के बाद ही वृद्धि मिलती है ।

ऐसे उत्सव में जाकर अपने स्वभाव को बदलना नहीं चाहिये । अपने दोष में परिवर्तन न हो तो समझना चाहिये की न फायदा न नुकसान जहाँ थे वहीं है । एक भाई से पूछे कि आप की उम्र कितनी हुई ? तो उसने कहा बांसठवाँ चल रहा है । ओ हो हो हो । जब आप छोटे थे तब से मंदिर नहीं आते ? हां, हां । इस में क्या कहना ! इतना ही नहीं, हमारे एक गुरुजी थे उन्होंने कहा था कि प्रातः उठकर पांच माला अवश्य फेरना । मैं बरह वर्ष का था उस समय से यह नियम रखा और आजभी चालू है । बहुत अच्छा । तो क्या आजभी पांच माला फेरते हैं ? हाँ ! बारह वरस से बांसठ वर्ष में पांच माला में कोई अन्तर नहीं ऐसा होने पर समझना चाहिये कि संतो के पास कोई विशेष कमाई नहीं हुई । यदि पेमेन्ट कम मिलती हो तो स्टाफ के लोग एकत्रित होकर हडताल करते हैं कि महंगाई बढ़गई है पेमेन्ट बढाइये । इसी तरह सत्संग में, भक्ति में, भजन में जब वृद्धि हो तो समझना चाहिये कि उत्सव में जाना सार्थक हुआ । जिस तरह दंतयज्ञ एवं नेत्रयज्ञ का केम्प होता है उसी तरह सत्संग रुपी, भगवान की भक्ति रुपी, कमाई में वृद्धि होना ही उत्सव है ।

इस नूतन वर्ष में योगिराज गोपालानंद स्वामी के कथनानुसार कमाई में वृद्धि अर्थात् भगवान की महिमा के साथ भक्ति में अभिवृद्धि हो ऐसी इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना के साथ बालवाटिका के वाचक सभी भक्तों को नूतन वर्षाभिनन्दन के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

•

### भाव हो तो भगवान भोजन करें

– साधु श्रीरंगदास ( गांधीनगर )

अपनी संस्कृति में ऐसा रिवाज है कि नूतन वर्ष में हर व्यक्ति एक दूसरे को मिले । अच्छा संबन्धहो तो एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं । अपने घर दीपावली के अवसर पर जो भी मिष्ठान्न या अन्य भोज्य पदार्थ बनाते हैं उसे आनेवाले के सामने रखते हैं । आप आइयेगा, आप भी आइयेगा ऐसा एक दूसरे को कहते हुये विदा होते हैं । इसी तरह जितने लोग आते हैं सभी के साथ इस तरह का व्यवहार किया जाता है । यह जगत व्यवहार हुआ । यदि आप इच्छा करते हों कि आपके घर भगवान आवे और हम इसी तरह का व्यवहार उनके साथ करें इसलिये इस लेख को शांति से वांचियेगा ।

कलियुग में मनुष्य ऐसा कहते हैं कि हमारे पास टाईम नहीं है । यह आज की बात नहीं है, आज से दो सो वर्ष पहले भी ऐसी परिस्थिति थी । हृदय में प्रेम हो, भाव हो भक्ति हो, सत्संग में दृढ प्रीति हो लेकिन उच्च पद के अधिकारी हों या खूब अच्छे व्यापारी हो, अच्छी कमाई होती हो तो भवान तथा संत के साथ सत्संग नहीं कर सकते । तो कैसे यह कह सकते हैं कि भगवान हमारे घर में सदा विराजमान रहते हैं ।

वडोदरा में रामचंद्र वैद्य थे । वे सामान्य बैद्य नहीं थे । बड़े-बड़े अधिकारियों के साथ संपर्क था । स्वयं सत्संगी भी थे । लेकिन भजन भक्ति एवं सत्संग के लिये समय नहीं मिलता था । एक दिन वे मन में विचारकरने लगे कि मैं सत्संगी तो हो गया लेकिन भजन भक्ति तो होती नहीं है । ऐसे वे गंभीर विचार में डूबे हुये थे कि श्रीहरि दिव्य स्वरुप में दर्शन दिये ।उनके मन की चिंता दूर हुई । उन्हें आश्वासन दिये । बाद में रामचन्द्र वैद्य इतने बड़े स्थान पर होते हुये कभी नित्य नियम में कमी नहीं किये । जिस तरह की दृढ भक्ति रामचन्द्र वैद्य की थी उसी तरह उनके पत्नी की थी ।

पति-पत्नी दोनो मिलकर प्रातः ठाकुरजी की आरती करते । ''सुखी गृहस्थ की सच्ची व्याख्या यह है कि पति-पत्नी में एकभाव हो तथा सद्भाव हो'' । पूजापाठ - शास्त्र पठन साथ में करते थे ।

अमृताबहन प्रतिदिन ठाकुरजी की रसोई स्वयं बनाती थी । शास्त्र तथा संत कहते हैं कि ''जो भगवान को अर्पण करके भोजन को प्रसाद के रुप में लेते हैं वह अमृत के समान होता है और शरीर के लिये सुखकारक होता है । अमृताबहन एकदिन भोजन बनाकर ठाकुरजी के सामने रखी और दोनो पति पत्नी भगवान को प्रसाद अर्पण करते समय सुन्दर गीत गाने लगे -

''आवजो छोगला धारी, मारे घेर,<br>
आवजो छोगला धारी,<br>
लाडु जलेबी ने सेव सुवाडी,<br>
हु तो भावे करी लावु छुं भारी, मारे घेर ।''

कीर्तन बोलकर जब थाली में दृष्टि किये तो जलेबी की एक थप्पी कम थी । भगवान स्वामिनारायण उस जलेबी को श्रद्धापूर्वक स्वीकार किये और लेजाकर गाँव में एक बहन को देदिये और कहे कि यह प्रसाद रामचन्द्र वैद्य का है । जलेबी अच्छी थी इसलिये प्रसाद के रुप में आपको देने आ गया । उस बहन को हुआ कि आज श्रीहरि स्वयं यह प्रसाद यहाँ देने आये। इसलिये इस प्रसाद को अगल-बगल के लोगों में बांट दूं । प्रसाद बांटके खाना चाहिये, कभी अकेले नहीं खाना चाहिये । आठ जलेबी थी इसलिये उस बहन ने आधी-आधी जलेबी प्रसाद के रुप में सोलह बहनों को प्रसाद के रुप में दिया ।

यह समाचार रामचन्द्र वैद्य को मिला । जलेबी का भोग कौन लगाया था । जलेबी का भोग तो आपही के घर में लगाया गया था, वैद्यराज ! श्रीहरिने हमें आपके यहाँ से आठ जलेबी प्रसाद के रुप में दिया और बताया कि वैद्यजीके घर का यह प्रसाद है । हम लोग इसे प्रसाद के रुप में वितरण करके ग्रहण किये है । तब वैद्यजी को हुआ कि भगवान स्वयं मूर्ति के स्वरुप में मेरे घर पधारे थे । मेरे भोग को प्रत्यक्ष ग्रहण किये थे।

इसलिये सज्जनो ! इस नूतन वर्ष में आपलोग भी वैद्यजी की तरह तथा अमृता बहन की तरह घर में या मंदिर में जाकर स्तोत्र पाठ, आरती, प्रार्थना, सत्संग, कथा, धून अवश्य करना, इससे भगवान आपके घर अवश्य पधारेंगे ।

### हमारे आगामी उत्सवों की यादी

**कार्तिक शुक्ल-१२** ता. ७-११-११ सोमवार को रंगमहोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव ( अहमदाबाद ) वडतालधाम पाटोत्सव ।

**कार्तिक शुक्ल-१४** ता. ९-११-११ बुधावार को श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर पाटोत्सव ।

**मार्गशीर्ष शुक्ल-५** ता. २९-११-११ मंगलवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२ पाटोत्सव ।

**मार्गशीर्ष शुक्ल-६** ता. ३०-११-११ बुधवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव ।

# भक्ति सुधा

**प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से - "प्रभु प्राप्ति के लिये मन शुद्ध रखना जरुरी है"**

- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

अन्तःकरण के शत्रु बाहर के शत्रुओं की अपेक्षा अधिक बलवान हैं। हमें यमयातना, चौराशी लाख योनियों में भोगनी पड़ती है। इन सभी का कारण मन है। मन जीव को परमात्मा से अगल करता है। अतः मन ही मनुष्य को मोक्ष के मार्ग से च्युत करता है। इसलिये मन को निरन्तर ज्ञान के साथ जागृत रखना है। जिस तरह पीपल का पत्ता, बिजली की चमक, मंदिर के ऊपर ध्वजा स्थिर नहीं रहती - इनका स्थिर रहना बड़ा कठिन है। इसी तरह मन को स्थिर रखना बड़ा कठिन है। दुर्गुण, अधर्म, दोष, ये सभी मन में उत्पन्न होते हैं। इसलिये प्रयत्न करके पांच ज्ञानेन्द्रिय तथा पंच विषयों से मन को हटा कर परमात्मा में स्थिर करना चाहिये।

परमानन्द स्वामी पूर्वाश्रम में क्षत्रिय थे। किसी विशेष रोग के कारण उनके पूर्वाश्रम के करीब २२ परिवार के सदस्य थे वे सभी मृत्यु को प्राप्त हो गये थे। पूर्वाश्रम का इनका नाम वेरा भाई था। वे महाराज के पास आकर कहने लगे कि महाराज ! मैं आपकी कृपा से अब सुखी हो गया हूँ। हमें आप साधु बनादीजिये। यह सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हो गये। उन्हें साधु की दीक्षा देते हैं। अब वे महाराज के पास रहने लगते हैं। परंतु क्षत्रिय होने से प्रकृति उग्र थी, एक बार खोखरा महेमदावाद की लड़ाई में किसी की तलवार लेकर और गुदडी की ढाल बनाकर लड़ने लगे। वे किसी को मार सके नही, लेकिन सामने वाले की तलवार से इनका एक कान कट गया। यह देखकर महाराजने कहा, आप को इस साधु वेश में यह शोभा नहीं देता, आप साधु के नियम में अब नहीं है। इसलिये आपको साधुओं के सौथ नही रहना चाहिये। बाद में महाराज उन्हें सफेद कपड़ां पहनाकर अपनी सेवा में रखे। ऐसा क्यों हुआ ? वह इसलिये कि वेराभाई के मन की शुद्धि नहीं हुई थी इसलिये जब तक व्यक्ति का मन शुद्ध नही होगा तब तक ऐसी वृत्ति बनी रहेगी। अपराधहोता रहेगा। कहने का मतलब यह कि साधु होने के बाद भी अन्दर से साधुता नहीं आयी, अन्दर में साधुता आनी आवश्यक है। इसलिये महाराज ने कहा कि जो लोग अपने मन को वश में रखते हैं उनके ऊपर जितना मैं प्रसन्न होता हूँ उतना जप-तप व्रत करने से नहीं प्रसन्न होता हूँ। इसलिये मन को वश में रखकर पवित्र जीवन जीना चाहिये। पशु पक्षी स्वयं के आत्मस्वरुप को नहीं पहचान पाते वे जो पाप करते हैं वह अज्ञान में करते हैं। इसलिये भगवान उन्हें माफ कर देते हैं। उन्हें कर्म बन्धन भी बाधक नहीं बनता। मनुष्य को भगवानने बुद्धि दिया है, विवेक दिया है, फिर भी अपने मन पर नियंत्रण नहीं कर पाता है। गलत कर्म करता रहता है। ऐसे व्यक्ति को महाराज माफ नहीं करते, उसे कर्म फल भौगना ही पड़ता है। ज्ञान होते हुये भी मनुष्य धर्ममय जीवन नहीं जीता। इसलिये मनुष्य के जीवन में शांति नहीं होती। इसी तरह स्वर्गलोक में देवों को भी शांति नहीं रहती, उसका कारण यह है कि पुण्य का क्षय होने पर मनुष्य लोक में जाना पड़ेगा। स्वर्गलोक भोग की भूमि है। वहाँ पर रहने वाले देवता मनुष्य की अपेक्षा हजार गुना अधिक सुख भोगते हैं। लेकिन वहाँ पर रहते हुये देवता पुण्य का उपार्जन नहीं कर पाते। मात्र मनुष्यदेह ही ऐसी है कि जिससे संयम एवं विवेक से जीव भोग तथा भगवान दोनो को प्राप्त कर सकता है। मनुष्य पुण्य कर्म से स्वर्ग लोक प्राप्त कर सकता है। परंतु जिस तरह हम मोबाइल का चार्ज करते हैं जब चार्जिग खतम हो जाता है तो फिर से चार्ज करते हैं। इसी तरह स्वर्गीय जीव मनुष्य लोक में अपने पुण्य को चार्ज करने के लिये आता है। इसी तरह मोक्ष प्राप्ति के लिये मनुष्य देह की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिये देवता भी इच्छा करते हैं। इस तरह मनुष्य का निर्माण प्रकृति से ऊपर उठकर पूर्णत्व को प्राप्त करने के लिये हुआ है। परंतु प्रायः सभी लोग इस लोक में आकर शरीर का सुख अपना सुख मान लेते हैं। सुख तीन प्रकार कार है - ( १ ) शरीर सुख : शरीर का सुख कब मिलता है ? शरीर का सुख निरोग रहने पर मिलता है। ( २ ) प्राण सुख : प्राण का सुख कब मिलता है ? जब प्राण निरोगी हो तब प्राण सुख मिलता है। मन निरोगी कब कहा जायेगा ? जब क्रोध, माया, मान, मोह, लोभ इत्यादि से

रहित होकर मन शुद्ध हो गया हो तब मन निरोगी कहलाता है। जब मन शुद्ध होता है तभी परमात्मा की प्राप्ति होती है। ( ३ ) आत्म सुख : आत्म सुख कब मिलता है ? आत्मा में परमात्मा का जब दर्शन होता है तभी आत्मसुख की प्राप्ति होती है। दर्शन भी ३ प्रकार का है। ( १ ) साधारण दर्शन : साधारण दर्शन किसे कहा जाता है ? जब भगवान का दर्शन स्वप्न में होने लगे तब साधारण दर्शन कहा जायेगा। ( २ ) मध्यम दर्शन : हमें मंदिर में जो मूर्ति का दर्शन होता है वह मध्यम दर्शन है। ( ३ ) उत्तम दर्शन : जब आत्मा में परात्मा का दर्शन हो तभी उसे उत्तम दर्शन कहा जायेगा । स्थावर-जंगम में जब परमात्मा का दर्शन होने लगे तो उसे अपरोक्षज्ञान कहा जायगा। परोक्षज्ञान किसे कहा जायेगा ? जब व्यक्ति-व्यक्ति में भगवान का दर्शन होने लगे तो उसे परोक्षज्ञान कहा जायेगा। जब आप को प्रत्येक में ईश्वर का दर्शन होने लगे तो शत्रुभाव खतम हो जायेगा। मैं जो दुःख भोग रहा हूँ वह अपने प्रारब्धकर्म का फल भोग रहा हूँ। इस तरह के भाव में कभी शत्रुभाव नहीं उत्पन्न होगा। कितने लोगों को यह प्रश्न होता है कि जब सभी में ईश्वर का दर्शन होने लगेगा तो कोई मनुष्य रहेगा ही नहीं ? ऐसा नहीं है, देव, ईश्वर तो बहुत सारे हैं लेकिन पुरुषोत्तम नारायण तो एक ही हैं। इसी तरह परमात्मा प्रत्येक में सूक्ष्म रुप से समाविष्ट हैं । जिस तरह किसी वर्तन में गंगाजल रखकर पहचान कराते हैं कि इसमें गंगाजल है। परंतु वही गंगाजल को नदी में डाल दिया जाय तो उससे पहचान पाना संभव नहीं है। मनुष्य अनेकों मायिक आचरण के कारण परमात्मा की पहचान नहीं कर पाता है। परंतु आत्मा के साथ ही परमात्मा है फिर भी पहचान नहीं पाता। जिस में सद्‌बुद्धि है उसे परमात्मा अवश्य मन में उत्साह, आनंद तथा निर्भयता प्रदान करता है। लेकिन जिसकी असद्‌बुद्धि है उसे भय, शंका तथा दुःख प्रदान करता है। जो महान व्यक्ति हैं वे परमात्मा के साथ संयुक्त रहते हैं और सांसारिक विषयों से मन को अलिप्त रखते हैं । इसलिये कि ज्ञान द्वारा मन को जागृत रखते हैं। खराब कर्मो से बचते हुये अच्छे कार्य करते रहते हैं। परिणाम स्वरुप ऐसे मनुष्य सुख शांति का अनुभव करके स्वतंत्र जीवन जीते हैं। तो इस तरह अच्छे कार्यों को करते हुए मन को शुद्ध करके प्रभु प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते रहना चाहिये।

●

## मन में उत्पन्न प्रश्नो का समाधान करने वाला अद्‌भुत ग्रंथ वचनामृत

- सां.यो. गीताबा तथा आनंदीबा (विरमगाँव)

आज से करीब १८९ वर्ष पूर्व भगवान श्री स्वामिनारायण के मुख से वचनामृत रुपी वाणी का अवतार हुआ था। विश्व के किसी भी युग में, देश में, किसी भी स्थल पर, किसी भी जाति में, किसी भी कुल में वर्ण आश्रम में समझ में आवे या न आवे, स्वीकार करे या न करे तथापि नाना प्रकार के प्रश्नों का जहाँ पर समाधान किया गया है, जिसमें अनंत शान्ति समाई हुई है, जिसकी आज के परिप्रेक्ष्यमें अनिवार्यता है। ऐसे अध्यात्मज्ञान से भरा हुआ वचनामृत है। ऐसा ज्ञान तत्कालीन संतो ने खूब परिश्रम से हम सभी को दिया है। प्रत्येक व्यक्ति के घर वचनामृत है। लेकिन कोई उसे खोलता नहीं है। धर्म की वात जब आती है तो गृहस्थ कहते हैं कि ये सभी त्यागियों के लिये है। महाराज ने गृहस्थ धर्म क्यों लिखा ? यह एक प्रश्न है।

आलसी जीवन गरीबी का मूल कारण है। इसलिये सभी भक्तजन वचनामृत का पाठ अवश्य करें रहस्य समझ नहीं आवे तो त्यागियों का सत्संग करें। संत समागम विना ज्ञान नहीं होता।

सारंगपुर के ११ वें वचनामृत में मुक्तानंद स्वामी का एक प्रश्न है। पुरुष प्रयत्न शास्त्र में वर्णित है। उस पुरुष प्रयत्न से कितना काम होता है। परमेश्वर की कृपा से कितना काम होता है। इस प्रश्न पर महाराज ने उत्तर दिया कि सद्‌शास्त्र के वचन में विश्वास करे, संतो के वचन में विश्वास करे, भगवान में आत्मनिष्ठा हो तो जन्म मरण से निवृत्ति होती है। पुरुष प्रयत्न से जगत के व्यावहारिक कार्य में सिद्धि होती है । लेकिन परमात्मा की कृपा हो तो कार्य सरल बन जाता है । जब भगवान की कृपा होती है तो उसे भगवान का एकांतिक भक्त कहा जाता है। इस प्रकार से समझाते हुये महाराजने यह भी कहा कि बहुत पुण्य के बाद ही मनुष्य शरीर मिलती है। इसे प्राप्त करने के बाद भी मनुष्य मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रयास नही करता है तो उसका मनुष्य जन्म लेना व्यर्थ है। सत्संग का सहारा लेकर जन्म जन्मान्तर का अज्ञानरुपी अन्धकार दूर हो जाता है। फिर उसके हृदय में ज्ञान रुपी प्रकाश प्रगट होता है

उसी में प्रभु का अखंड दर्शन करते - करते वह अक्षरधाम का अधिकारी हो जाता है । चारित्र्य जीवन का पाया है । इसकी रचना करने वाले संत है । संत स्वयं तप: पूत होकर दूसरे को आत्मज्ञान का उपदेश करते है । साधु का अर्थ होता है जो अपने तथा दूसरे के कार्य को सिद्ध करे, दूसरे को सुख दें उसे साधु कहते हैं । जिनका मन भगवान स्वामिनारायण में है वही संत है । ऐसे संत का सत्संग करने में आत्मकल्याण निश्चित है । एक कल्याण भक्त थे । उनका स्वभाव गरम था । पूजापाठ करते सत्संग करते फिरभी स्वभाव में कोई फर्क नहीं था । कृषिकार्य में भी ध्यान नहीं देते थे इसलिये उपज भी ठीक नही थी । एक दिन उनकी माता ने कहा बेटा अब तूं बड़ा हो गया, तेरे विवाह का समय भी आ गया । तुम्हारे पिता के स्वर्गस्थ हुये पांच वर्ष बीत गये । मैं बड़े दु:ख के साथ जैसे तैसे तुम्हे पढाई हूँ । ऐसी वात मां ने कहा तो वह खूब गुस्से में आ गया । अपनी मां को धक्का मारा, वह दीवाल से टकरा गयी, वही पर उसकी मृत्यु हो गयी । सारा गाँव एकत्रित हो गया, बेटे को धिक्कारने लगा - तूं मां का हत्यारा है । पापी तुझे माँ को मारते समय हृदय नहीं कांपा ? जिस मां की गोंद में सोकर उसका दूधपीकर बड़ा हुआ उसी को धक्का मारकर मार डाला ।

तेरे हाथ का खाना पीना ठीक नहीं, तेरे मुह का दर्शन भी पाप है । इस गाँव से निकलजा । उसका सभी गाँव वाले तिरस्कार करने लगे । वह वहाँ से निकल कर जंगल में चला गया । उस जंगल से कोई आता जाता तो उसे मार-पीट कर उसकी सभी सामान छीन लेता । उसी समय भगवान स्वामिनारायण वडताल से निकल रहे थे कि एक संत की तबियत बिगड़ गयी, रात्रि का समय, अव वे क्या करें ? वृक्ष के नीच बैठकर सतत स्वामिनारायण भगवान का स्मरण करने लगे । उसी समय वह कल्याण जो अपनी मां को मार कर यहाँ लूटपाट करता था उसकी दृष्टि संत पर पड़ी । दर्शन होते ही उसके विचारों में परिवर्तन आ गया, निर्मल मन हो गया, संत के चरण में आकर प्रणाम किया और पूछा आप इतनी रात्रि में कहाँ जा रहे हैं । साधुने बताया कि हम वडताल उत्सव में जा रहे हैं । कल्याण ने कहा, वडताल तो यहाँ से सात गाँव दूर है । तो किस तरह वहाँ आप पहुँचेगे ?

यहाँ रात्रि में रहने लायक नहीं है । यहाँ हिंसक जानवर रहते हैं । संतो ने कहा श्रीहरि की जैसी इच्छा । डाकू अपनी वात सुनाता है । स्वामीजी मुझसे बड़ा पाप हो गया है । हमारी माताजी की मुझसे मृत्यु हो गयी । अब मैं समाज में मुंख दिखाने लायक नहीं हूँ । जंगल में घूमता रहता हूँ । इतना कहकर डांकू रोने लगा । धैर्य दिलाते हुये संतो ने कहा रोओ मत ? भविष्य का विचार करना चाहिये कि गुस्से में मैं जो कुछ करुंगा उसका क्या परिणाम होगा । भगवान तुम्हारा अच्छा करेंगे । तुम भी मेरे साथ वडताल चलो । डाकू अपने कंधे पर रखकर बिमार संत के लेकर वडताल पहुंचा वहाँ पर महाराज संतो की सभा में विराजमान थे। वहाँ पर विमार संत को कंधे से उतार दिया । श्रीहरि के चरण में गिरकर प्रणाम किया । प्रभुने उसे करुणा दृष्टि से देखा, और कहा कि हमारे संत को कंधे पर बैठाकर लाये हो, ऐसा कहा कि तुरंत उसे समाधिलग गयी । अब उसका पाप जल गया । हृदय में प्रभु का दर्शन होने लगा । संत सेवा का यह फल है । सारंगपुर के ११ वें वचनामृत का सार भी यही है कि पुरुष प्रयत्न करने से मोक्ष का मार्ग खुल जाता है । इसी तरह आप सभी अपने वालकों के साथ संत सत्संग करे जिससे आत्मकल्याण कर सकें ।

**श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस**

**shreeswaminarayan9@gmail.com**

**नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये**

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**

# सत्संग समाचार

### अहमदाबाद मंदिर में शरदोत्सव सम्पन्न

आश्विन शुक्ल-१५ शरद पूनम को अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायण देव के सानिध्य में मंदिर के विशाल प्रांगण में शरदोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था।

श्वेत वस्त्र में मंडित भव्य मंडप में स्टील के विविधवासनो के हार में सर्पोपरि श्रीजी महाराज सिंहासन में विराजमान होकर दर्शन दे रहे थे। रात्रि ९-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे उस समय श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल द्वारा शरदोत्सव का कीर्तन गाया जा रहा था। उसे सुनकर प्रसन्न मुख से प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया था। पूर्णाहुति की आरती प.पू. बड़े महाराजश्रीने उतारी थी। इस प्रसंग का आयोजन महंत स्वामी की प्रेरणा से को. दिगम्बर भगत ने किया था। अन्त में सभी भक्तों को दूधचिउड़ा का प्रसाद दिया गया था। (मुनि स्वामी)

### अहमदाबाद मंदिर में दीपावली के विविधकार्यक्रम धूमधाम से मनाये गये

भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में दीपोत्सव के प्रसंग पर विविधकार्यक्रम उल्लास पूर्वक मनाये गये थे।

<u>काली चौदश :</u> सर्वोपरि धर्मकुल के कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराज का काली चौदश के दिन भव्य पूजन अर्चन तथा आरती प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न किया गया था। हजारो दर्शनार्थियों ने आरती के दर्शन का लाभ लिया था।

<u>समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन :</u> प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी दीपावली के शुभ अवसर पर ता. २६-१०-११ बुधवार को सायंकाल ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथ से शारदापूजन संपन्न हुआ था। हजारो व्यापारी हरिभक्तों ने अपने व्यापार से सम्बन्धित लेखा जोखा के रजिस्टर पूजन प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से करवाकर धन्यता का अनुभव किया था। दूरदर्शन की कैमराटीम इस आयोजन को कवरेज करके समग्र गुजराती धार्मिक जनता को दर्शन करवाया था।

<u>नूतन वर्ष - अन्नकूटोत्सव :</u> कार्तिक शुक्ल-१ शुभ नूतन वर्ष के प्रातः ५-०० बजे श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प.पू. बड़े महाराजश्री ने उतारी थी ६-३० बजे श्रृंगार आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ने उतारी थी। इसके बाद अपने बैठक में भक्तों के दर्शनार्थ बैठे रहे। आज के दिन मंदिर का पूरा प्रांगण खचाखच भरा हुआ था। शहर के तथा गाँव के हरिभक्त दर्शन के लिये उमड़ पड़े थे। दोपरह १२ बड़े प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने भव्यातिभव्य भोग की आरती उतारकर भक्तों के दर्शनार्थ उन्मुक्त कर दिया था। समग्र प्रसंग मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से को. पार्षद दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन में ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, स्वा. हरिचरणदासजी (कलोल) भंडारी स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, पुराणी धर्मजीवनदासजी, जे.के. स्वामी, नटु स्वामी इत्यादि संत मंडलने तथा हरिभक्तों ने सुंदर सेवा करके भगवान को प्रसन्न किया था। (मुनि स्वामी)

### सर्वोपरि छपैयाधाम में पारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्रीके आशीर्वाद से सुरेन्द्रनगर की सां.यो. कमलाबा, सां.यो. कोकिलाबा तथा सां.यो. उषाबा की प्रेरणा से श्री बाबूभाई मोहनभाई अडालज के यजमानपद पर सर्वोपरि छपैयाधाम में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण स.गु. शा. स्वामी श्रीजीप्रकाशजी (नारायणपुरा मंदिर महंतश्री) के वक्तापद पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर झालावाड प्रांत के सुरेन्द्रनगर रतनपर इत्यादि गांवों के ४०० जितने हरिभक्तो का संघ छपैया आया था।

कथा प्रसंग में संगीत के सुमधुर वातावरण में श्री रामप्रतापभाई का विवाह प्रसंग, अन्नकूट, अभिषेक तथा महापूजा इत्यादि प्रसंग को संपन्न किया गया था। इस दिव्यधाम में (प.पू. बड़े महाराजश्री की छोटी बहन) मुंबई से पधारी हुई थी। जेतलपुरधाम तथा अयोध्या मंदिर से भी संत पधारे हुये थे। यहाँ के महंत ब्रह्मचारी वासुदेवानंदजीने आवास-भोजन इत्यादि की सुन्दर व्यवस्था की थी। हरिभक्तों के संघ द्वारा नूतन निर्माण कार्य हेतु पचीस लाख रुपये को भेंट किया गया था। सम्पूर्ण आयोजन सुरेन्द्रनगर मंदिर के को. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, श्री पंकजभाई, श्री जीतेनभाई तथा श्री शैलेन्द्रसिंह झाला द्वारा किया गया था। इस प्रसंग पर सुरेन्द्रनगर के संसद सदस्य श्री सोमाभाई गांडाभाई भी कृष्णवल्लभ स्वामी

के आग्रह पर पधारे हुये थे । इस तरह सर्वोपरि छपैयाधाम में सर्वोपरि उत्सव सम्पन्न हुआ था। ( शैलेन्द्रसिंह झाला )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ३-१०-११ को श्री विनोदभाई पटेल के यहाँ श्रीजी डेरी के उद्घाटन के बाद श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा दर्शनके लिये पधारे थे । पु. स्वा. चन्द्रप्रकाशदासने प.पू.ध.धु. आचार्यश्री का सुंदर स्वागत किया था । ठाकुरजी का दर्शन करके प.पू. महाराजश्री मंदिर के सभा मंडप में पधारे थे । बाद में मंदिर के जीर्णोध्धार के काम को देखने पधारे थे । सभामंडप जीर्णोध्धार के यजमान श्री बाबूभाई सोनी के ऊपर प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । यहाँ के मंदिर में परम्परानुसार भक्तिभाव पूर्वक उत्सव मनाया गया था । जिसमें केका काका, प्रमुख नटवरभाई, तथा श्री ईश्वरभाई पटेल इत्यादि उत्सव में सक्रिय भाग लिये थे । शरद पूनम का उत्सव धूमधाम से मनाया गया । यहाँ के महंत स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से सुंदर आयोजन किया गया था। ( भाविन पटेल )

**इडर मंदिर में अन्नकूटोत्सव तथा गाँवों में सभा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर में बिराजमान श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के समक्ष कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को भव्य अन्नकूटोत्सव मनाया गया था । ऐसे अलौकिक दर्शन का लाभ लेने के लिये इडर गाँव के अगल बगल वाले जितने भी गाँव के हरिभक्त हैं सभी पधारे हुये थे । यहाँ के महंत जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के गाँवो में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजी, स्वा. वासुदेवचरणदासजी, स्वा. विश्ववल्लभदासजी, श्रीजी स्वामी तथा सत्यसंकल्प स्वामी इत्यादि संतो ने फिचोड, रतनपुर, थुरावास, साचोदर, मणीयोर, अरोडी, सलवाड इत्यादि गाँव में सत्संग सभा द्वारा धर्मकुल की महिमा का प्रसार प्रचार किया गया था । ईडर मंदिर में भी यदाकदा उत्सव के माध्यम से सत्संग का लाभ मिलता रहता है। ( शा. स्वा. सत्यसंकल्पदास )

**वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर**

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडगर में आश्विन शुक्ल-१५ शरद पूर्णिमा के दिन शरदोत्सव महंत स्वा. नारायणवल्लभदासजीके मार्गदर्शन में मनाया गया था । रात्रि में ८ से ११ तक सन्त-हरिभक्तों ने कीर्तन-धुन करके उत्सव का रुप दिया था । श्रीहरि की आरती का लाभ किरीटभाई बाबूलाल भावसारभाईने लिया था । शरदोत्सव की सजावटका कार्य को.शा. विश्वप्रकाशदासजीने किया था । जिसके दर्शन का लाभ वडनगर के अगल-बगल के हरिभक्तों ने लिया था।

( महंत स्वा.नारायणवल्लभदासजी )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से बालासिनोर मंदिर में आश्विन शुक्ल-१२ को शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिसमें लसुन्द्रा, कपडवंज, डेमाई, लुणावाडा, कोठंबा, संतरामपुर इत्यादि गाँवो के हरिभक्त पधारे हुये थे । शा.स्वा. हरिस्वरुपदासजीने ठाकुरजी को बहुत सुन्दर ढंग से अलंकृत किया था । ठाकुरजी की प्रथम आरती शा.स्वा. आनन्दजीवनदासजी ने तथा विष्णु स्वामीने की थी । महारास में संतो के साथ हरिभक्त भी बड़ी संख्या में भाग लिये थे । गोविन्दभाई वाडीलाल प्रवीणभाई वाडीलाल, दक्षेशभाई जयंतीलाल, नन्दलाल मूलजीभाई इत्यादि हरिभक्त आरती के यजमान थे । इनाम वितरण में पुरुषों को तथा स्त्रियों को क्रम से रखा गया था । अन्त में पूर्णाहुति के बाद दुग्धचीउड़ा का प्रसाद सभी को दिया गया था । इनाम वितरण के यजमान मयूरभाई अमृतभाई काछिया थे । ऐसे दिव्य प्रसंग का लाभ लेकर हरिभक्त धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।( राकेश एन. काछिया )

**श्रीहरि के दिव्यचरणों से अंकित माणसा मंदिर का जीर्णोद्धार काम**

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से स.गु. महानुभावान्द स्वामीने यहाँ का शिखरी मंदिर बनावाया था । श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज स्वयं श्रीहरि के स्पर्श से प्रसादीरुप है । महाराज यहाँ पर तेरह बार पधारे थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से माणसा मंदिर का जीर्णोद्धार काम चल रहा है । हरिभक्तों को इस कार्य में सहयोग करने की विन्ती है । श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा, जि. गान्धीनगर ( गवैया चन्द्रप्रकाशदासजी ) ( ०२७६३-२७०२१९ )

**बड़ोल (भाल) के हरिभक्तने मूली मंदिर श्री राधाकृष्ण देव को किम्मती स्वेत अर्पण किया**

संप्रदाय के महान कवि स.गु. देवानंद स्वामी का जन्म स्थल भाल विस्तार का बड़ोल गाँव जो मूली श्री राधाकृष्णदेव तथा अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी का निष्ठावान गाँव है । समस्त धर्मकुल की इस गाँव पर अपार कृपा है।

यहाँ के एक युवान सत्संगी श्री दानभा मावजीभा परमार के पुत्र श्री जेशंगभाई को श्रीहरि कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से संकल्प हुआ कि मेरे पिता के

स्मरणार्थ मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज को खेत भेंट करना है। ऐसा अलौकिक संकल्प होते ही उन्होंने मूली के देव को ४ एकड़ जमीन अर्पण करके पूर्ण किया। जिस की कीमत अन्दाजित ४० लाख है। ऐसे युवान को धन्यवाद है। ऐसे युवान को प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, लालजी महाराजश्री इनके उपर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं।

**कैयल गाँव में सत्संग सभा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर के अखिलेश्वरदासजी संत मंडल के साथ सत्संग के लिये नूतन गाँव कैयल में सुन्दर सत्संग सभा का आयोजन किया था। गाँव के भक्तोंमें श्री चन्दुलाल पटेल, श्री महेन्द्रभाई, श्री कनुभाई पटेल इत्यादि भक्त प्रसंग में अग्रसर थे। इस गाँव में सत्संगियों की कन्याये है जिससे सुन्दर सत्संग का कार्य हुआ था। प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीने महिला वर्ग को आज्ञा की थी जिससे महिला मंडल की स्थापना हुई थी। शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजीने तथा सुखनन्दनदासजीने कथा का रसपान कराया था। यहाँ पर अब सत्संग सभा नियमित होगी।

( शा. सर्वेश्वरदास )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर जडेश्वरपार्क महादेवनगर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा प्रसाद से यहाँ पर भाद्रपद शुक्ल-११ एकादशी को प्रभु की नगरयात्रा साबरमती में स्नान कराकर भाद्रपद कृष्ण अमावस्या तक महादेवनगर के अगल बगल के विस्तार में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करवाया गया था। रात्रि ९ बजे से १० बजे अगल-बगल के भक्तों के यहाँ रासोत्सव के कार्यक्रम दरम्यान करीब १०८८ भक्तों ने अपने यहाँ श्रीहरि को पदार्पण करवाया यहाँ मंदिर के कोठारी तथा हरिभक्तों की प्रेरणा से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ था। संत प्रदिदिन रात्रि में कथा प्रवचन का लाभ देते हैं। ( नटवरभाई पटेल )

**प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा**

श्री प्रभाहनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से ता. १७-१०-११ शनिवार को घनश्याम स्वामी के वक्तापद पर सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। वक्ता महोदय ने बहुत सारे नये हरिभक्त बनाये तथा कितनो को निर्व्यसनिक बनाये थे। १८५० जितने भक्त हनुमान दादा का दर्शन करके कथामृत का पान किये थे। बाद में प्रसाद लेकर सभी अपने घरों के लिये प्रस्थान किये थे। ( स्वप्निल, निसर्ग )

## मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

**सुरेन्द्रनगर मंदिर में अखंड धुन**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली मंदिर स्वामी विष्णुचरणदासजी द्वारा पवित्र श्रावण मास में मूली देश के गाँव में प्रतिदिन १२ घन्टे की अखंडधून तथा कथामृत का रसपान कराया जाता है। धुन की पूर्णाहुति श्रावण कृष्ण अमावस्या के दिन सुरेन्द्रनगर मंदिर में प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से की गयी थी। इस प्रसंग पर मूली, ध्रांगध्रा, अमदावाद, मोरबी तथा हलवद से संत पधारे थे। प्रासंगिक सभा में प.पू. बड़े महाराजश्रीने देव-गादी के वफादार रहने के लिये मार्मिक वात कही थी। इस आयोजन में जिष्णु स्वामी, निलकंठचरण स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, नारायण भगत तथा उनके शिष्य मंडल सेवा में लगे रहे। सुरेन्द्रनगर मंदिर के कोठारी स्वामी के मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने प्रेरणारुप सेवा कार्य किया था। ( शैलेन्द्रसिंह झाला )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ( बहनो का घांचीवाड ) में प.पू. आचार्य महाराजश्री का ३९ वाँ प्रागट्योत्सव आश्विन शुक्ल-१० ( विजया दशमी ) को रात्रि में ९-३० बजे २५० जितने सत्संगी बहने तथा सां.यो. बहन कंचनबा, हीराबा, भगवतीबाइत्यादिने साथ मिलकर प्रागट्योत्सव मनाया था। सां. कंचनबाने धर्मकुल की निष्ठा के विषय में कथा की थी। ( अनिलभाई दुधरेजिया )

## विदेश सत्संग समाचार

**वोशिंग्टन डी.सी. (आई.एस.एस.ओ. चेप्टर अमेरिका)**

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से यहाँ की सत्संग प्रवृति अच्छी चल रही है।

१८ अगस्त शनिवार सायंकाल ५-०० से ९-३० बजे तक इल्करीझ के चर्च में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें भजन कीर्तन के साथ वचनामृत का भी पठन किया गया था। सायंकाल ६-३० से ७-३० तक कोलोनिया मंदिर से पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजीने इन्टरनेट के मदद से लाइव वीडीयो द्वारा कथामृत का रसपान कराया था। मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव तथा जलोत्सर्ज एकादशी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

१७ सितम्बर शनिवार को सायंकाल ५-०० बजे से १०-३० बजे तक सत्संग सभा हुई थी। जिसमें "आज मारे ओरडे" ठाकुरजी के समक्ष भजन कीर्तन हुआ-बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आज्ञापत्र सभा में वांचा गया। जिस

आज्ञा को सभी भक्त शिरोधार्य करके आज्ञापालन के लिये कटिबद्ध हो गये। ८-३० से १०-३० तक नंद संतो द्वारा रचित रास गरबा का प्रोग्राम बहनोने किया था। ( कनुभाई पटेल )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में शुक्र-शनि तथा रविवार को त्रिदिवसीय श्रीमद् भागवत दशम स्कंन्धकी कथा शा.स्वा. निर्गुणदासजीने की थी। जिसके मुख्य यजमान श्री प्रवीण शाह तथा सहयजमान महेन्द्र सोलंकी थे। सुंदर पोथीयात्रा तथा वक्ताजी का पूजन विधिवत किया गया था। न्युजर्सी से बहुत से भक्त कथा सुनने के लिये आये थे। हजारो हरिभक्त पूजनीय संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार के मुख की वाणी सुनकर धन्य हो गये थे। इस प्रसंग पर विहोकन मंदिर से शा.माधव स्वामी तथा भगवतप्रसाददासजी पधारे थे। यहाँ के महंत स्वामी तथा कथा के यजमान ने वक्ता महोदय का स्वागत किया था। ( प्रवीणभाई शाह )

**अमेरिका के पारसीप के नूतन मंदिर का निर्माण विधि**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से पारसीप के छपैयाधाम मंदिर के निर्माण कार्य का शुभारंभ आश्विन शुक्ल-१० विजया दशमी के दिन पू. आचार्य महाराजश्री के प्रागट्य के दिन मंदिर में आरती के बाद प्रातः १०-०० बजे मंदिर के महंत स्वामी द्वारा किया गया था। कीर्तन भजन- धुन के बाद विघ्न विनायक देव का पूजन अर्चन करके आरती उतारी गयी थी। महंत स्वामी ने आने वाले सभी हरिभक्तों को आशीर्वाद दिया था। हरिभक्तों में श्रीप्रहलादभाई, श्री भक्तिभाई, मोरडीया शंकरभाई, ठाकोरभाई, घनश्यामभाई, प्रेमचंदभाई, रसिकभाई पटेल, रमेशभाई मारफतिया, श्री हसमुखभाई अमीन, प्रमोद पटेल, हितेश काकडिया इत्यादि हरिभक्तों ने सेवा का कार्य किया था। अन्त में सभी प्रसाद लेकर विसर्जित हुये थे। ( प्रवीणभाई शाह )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से शिकागो मंदिर में संप्रदाय के समस्त उत्सव धूमधाम से मनाये जाते है। महन्त धर्मवल्लभदासजीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित अवतार चिंतामणी की सुंदर कथा की थी।

विजया दशमी के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के ३९ वें प्रागट्योत्सव को सभी मिलकर धूमधाम से मनाये थे। शरद पूनम को महिलाओं ने सुन्दर कार्यक्रम करके दूध-जिउड़ा का प्रसाद वितरण किया था। पुजारी हरिनंदन स्वामी प्रसंग में प्रेरणा रुप थे। ( वसंत त्रिवेदी )

## अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

**ऊँझा :** श्रीहरिभाई करशनदास मोखात ता. ७-१०-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**अहमदाबाद-नवावाडज :** श्री मुकेशकुमार नगीनदास भावसार ( नारायणघाट-मंदिर में सक्रिय सेवाभावी ) ता. १३-९-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**अंबापुर :** श्रीमती कमलाबहन डाह्याभाई पटेल ता. २३-९-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुयी अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**विरमगाँव :** श्रीमती धेलीबहन केशवलाल पीठवा ता. २७-९-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुयी अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**धाटीला (मूलीदेश) :** सांख्ययोगी रतनबा ( उ. ८३ वर्ष ) ता. २९-९-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुयी अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**दोलाराणा वासणा :** श्री स्वामिनारायण मंदिर की पुजारी आनंदीबहन केशवलाल भावसार आश्विन शुक्ल-११ ता. ७-११-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**लालोडा :** श्री प्रभुभाई मोहनभाई नरशाभाई पटेल ता. ३१-१०-११ ( लाभ पांचम ) को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।